



## रिदेह दिनांक 15 फरबरी, 2008

संपादकीय

वर्ष: 1      मास: 2      अंक: 4

रिदेहक एहि अंकमे सभ नियमित सुंभ देन गेन अछि । आरं ङा पत्रिका चनि पड़न अछि । पहिलका अंक सभमे किछु ठंकाक अशुद्धता दृष्टिगोचर भेन छन । एहि अंकमे ओकर विशेष ध्यान बाखन गेन अछि, कावण साहित्यिक पत्रिकामे अशुद्धिक कोनो स्थान नहि छैक ।

रिश्क कोन-कोनसँ ङा-मेन प्राप्त भेन, आ' हम आह्लादित भय गेन छी । ङा पत्रिका बिना कोनो रिनरंक सानक- सान चलेत बहत, से हम अपने नोकनिकेँ रिश्वास दैत छी, आ' ओ' आरंय रीना कान सिद्ध कबत ।

रिश्वास की कछु । अगिना सप्ताह हम दरुंभा जायत, अपने भतीजीक रिवाहमे । ओतय मिथिना बिमर्च गंभीरता आ' संस्कृत रिश्वरिद्यानयक भ्रमण कबर आ' देखैत छी, जे कोन नर अनन्त चीज नन्त होगत अछि ।

चित्रक पौतीकेँ दू भाग कए देन गेन अछि, मिथिनाक खोजमे चित्रकनाक संग प्रवातलक रसु सभक आ' दर्शनीय स्थान सभक संकनन अछि । मिथिना बनेमे इतिहासिक आ' रत्तमान महाप्रकषक चित्रक प्रदर्शनी अछि । एहि संकननकेँ एहिना सहयोग दय रैत । मैथिनीमे एनीमेशनक घोष अन्तार अछि, आ' जेँ कही जे अछिये नहि, तँ मूठ नहि होयत । संगीत आ' संस्कृत शिक्षा सेहो धन्यामेक सामर्थीक रिना अपूर्ण नगैत अछि । अछु दू दिने हमर प्रयास शीघ्र जायत, अपने नोकनिसँ तकनीकी

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pāṅṅik ĩ pātrikā ridēh' pāṅṅik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

सहयोगक आशी करैत छी । हमब गछा अछि, जे रौनारुां ध्रुतेमे देन गेन थिस्सार्के एनीमेठ कबी ।

डा. धनकब ठाकुर हमबा एकठां ग्रा-मेनमे हमब गामक (मेहथ, संभावपुव) एकठां नाठककाब आनंदक रिषयमे पुछने छुनाह, जे ओ' आंग कान्हि कतय छथि । से ओ गामेमे बहत छथि । संभर होयत तँ हनकब कोनो ध्रुति शीघ्रे 'रिदेह'मे ग्रा-प्रकाशित होयत । हम 1993-94 मे बाँचीमे लोकबी करैत छुनहँ । अपन एकठां पबिचितक संग श्यामनीमे एक गोठ डॉकठब साहेरसँ भैठ भेन छुन, ओ' धनकरे जी छुनाह । असु धनकबजीक पितार्जीकेँ भगरान उँच भगरत पद देखुह ।

एनीमेशन आ' मागफासाँअठ एस. क्यू. एन. डाठारैसमे ज्याति नावायण नानजी,ब्रैज कर्ण, मणि ठाकुर आ' आन पाठक हमबा तकनीकी मदति कबताह से हम आशी करैत छी । श्री गंगेशी गृजनक ग्रामेन आ' माझ निर्देशन प्राप्त भेन, ओ' अपन बचना पठेरौक आश्रिसन सेहो देनहि अछि । रिद्यानंद जी पङ्गीकाब जी अपन निरंध पठेने छथि, से आरि रूमना जागत अछि जे बचनाक भवमाब नागय रना अछि । संभठां बचना उँचसुवरीय बहत आ' पत्रिका पाङ्गिक आधाब पब नियमित चनेथ बहत से आशी करैत छी ।

सांगठक खोज सर्च गंजन पब आसानीसँ होय ताहि हेतु किछु रिशेष प्रयास कएन गेन अछि । एहि संरंधमे कोनो तकनीकी स्वमार जेँ अपनेक समझ होय, तँ से आमंत्रित अछि ।



अपनेक बचनक आ प्रतिफ्रियाक प्रतीक्षामे ।

नङा दिनी 15/02/08

गजनेद्र ठाकूर

रिदेह 15 फरबरी 2008

रर्ष 1 मास 2 अंक 4

एहि अंकमे अछि:-

1. शोध लेख:

मायानन्द मिश्रक गतिहास रोध (आँगा)

2. उपन्यास

महसुरौहनि (आँगा)

3. महाकाव्य

महाभावत (आँगा)

4. कथा

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

5. पद्य

(थाँगा)

6. संस्कृत शिक्षा

(थाँगा)

7. मिथिना कना- चित्रकना

(थाँगा)

8. संगीत शिक्षा

9. रौताना पुते

10. पंजी प्ररंध

(थाँगा)

- लेखक- रिद्यानंद ना पञ्जीकाव

11. मिथिना था संस्कृत

12. भाषा था प्रौद्योगिकी

13. बचना निखरौसँ पहिने... (थाँगा)

videhavidēh pratham mēthilī pākṣik ī pत्रिका 15 फरबरी 2008(वर्ष1 मास 2 अंक 4) <http://www.videha.co.in/>

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह **विदेह** Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

14. प्ररासी मैथिन English मे



## 1. शोध लेख:

### मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (खाँगा)

खण्णा-शैना सँ शुक होगत अछि दोसब भाग । 10000 अ.पू. । भाषाक आरंभक आरंभ  
मायानन्द मिश्र एहिमे प्रकठ कएने छथि । एहिमे रँडु नीकजेकाँ संकेत भाषासँ ध्वनिक  
संरंध पविनस्मित कएन गेन अछि ।

चनंत सँ श्विब जीरनक शुकखात सेहो देखायन गेन अछि ।

तकव रौद शैना कवानी अध्यायक आरंभ होगत अछि । 7500 रर्य पूरिसँ ।

गौ पाननक चर्चा होगत अछि, गायक संख्यामे पर्याप्त रूझि भेन छन । सभ बहथि  
चवरौक, चर्म रन्ध्रधारी आ कठिमे पाथवक हथियाव । भेड, रँकवी आ सृग्गव छन किछ  
खान पौसिया जंतु जात । घासक बस्सी, त्रिशून आ नागदेरक चर्चा होगत अछि ।  
रौक नाम आरंभ जागत अछि, ओजा ।

दनाथाक नाम पडत अछि शैना कवानी । पशुक संख्या रँहन तँ पशुक चोबि सेहो शुक  
भ गेन । पीपवक गडक नीचाँ रँठकीक शुकखात भेन । कवानीकेँ खँना नाम पडन ।

कवानी-महेश अध्यायमे 5000 अ.पू. मे ऋषिक आरंभ देखाओन गेन अछि । महेश  
रीया रौग कए बहन छथि । जरकेँ पका क खयरौक चर्चा होगत अछि । आरंभ धावक  
नाम सेहो बाखय जाय नागन । महेश हन द्वारा पौस केव माँस खेनाग तँ एकदम  
निष्कृ भ गेन । ओजा निंग स्थानमे रँसन बहत छनाह ।

तकव रौद महेश-पावरती अध्याय शुक होगत अछि 4 सँ 5 हजार रर्य पूरि । धानक  
हसिनक आरंभ भेन । पावरती जहिया खयनीह तहिया नान माँसि माथमे ओतुक्का प्रथाक  
खनुसाव नगा देन गेन । पुत्रक नाम गणेश पडन । एहिसेँ पहिने संतानक परिचय नहि  
देन जागत छन ।

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā bidēh' pākṣik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 2. उँपन्यास

### सहस्ररौढनि

हमव प्रवान जीरनक ङा एकठा नीक खन्नभर छन । रौदमेतँ दूर्यठना तँ हँसी-खेन भ' गेन, नहि एकवासँ कोनो दुःख होगत छन नहिये कोनो नम्यक प्रति तेना भ' कय पङ्गत छनहँ । खेन सेहो रैह नीक नागय जाहिमे ठीम नहि बहत छन रवन राजिगत स्पर्धा रँना फ्रीडा नीक नगैत छन । एकव कावण सेहो छन, किएकतँ एहिमे ठीमक प्रदर्शन पव राजिगत प्रदर्शन निर्भव नहि करैत छन आ' जे रँङाग आकि रूवाग भेटैत छन से राजियेकेँ भेटैत छन । खहाँ ङा नहि कहि सकैत छी, जे ओकवा कावण हम हावनहँ, हमतँ नीक प्रदर्शन कएने बही ।



स्मून आ' पढ ागक अतिविज्ज ण्णा ण्ण्डाक स्थान नूने छन । नम्ब्याक प्रति जे निबपेम्बता रौदमे हमवामे आयन छन, से ओहि समयमे नहि छन । ओहि समयमे तँ जगतकेँ जितरौक धूनि छन । द्वितीय स्थानक तँ कोनो प्रह्न नहि छन । द्वितीय स्थानक माने छन खन्नतीर्ण भेनाग । खेनोमे, पढ ागयोमे, मावि-पीठमे सेहो ।

गाम आन-जान खूरँ होगत छन । ओहि फममे गाम जागत बही तँ महादेर पौखवि पबक स्मूनमे काका शिक्षककेँ कहि अरौत छनाह, आ' हम च्छ्णीयो मे स्मून जागत बही । करँड्डी, सतघबिया, नान-छ्छ्डी ङा सभ खेनक नामो तँ शीहबक रँछाकेँ रूमन नहि होयतेक । अस्तु ओतुक्का पढ ागक सभ प्रणानी खनग छना । प्रतिदिन कबची कनमसँ निखना निखयमे देह सिहवि जागत छन, आ' रोजनामचा सेहो एहि प्रारे निखेत बही-भोरे-सकारे उठनहँ निह कार्यक उपवात जनखग क' कय पठरौक हेतु रँसनहँ, हेब स्मून गेनहँ, ओतय सँ एनहँ, पुनः खेनाग खेनहँ । हेब स्मून गेनहँ, हेब गाम पब एनहँ आ' हेब जनये कएनहँ । हेब खेनाग नेन गेनहँ । हेब आरि कय नानठेनक शीशारकेँ साह केनहँ, हेब पढनहँ आ' हेब भगरनक नाम नय सूति गेनहँ । बरि दिनक छ्छ्णीक रँदना सोम दिन दू दिनक रोजनामचा निखि कए न' जाय पढेत छन ।

15 अगस्तक उंसोह सेहो दोसरे तबहक छन । साँन-आ' भोवमे 15 अगस्त स्मृतव्रता दिरस, भावत माताक जय केब संग सभ महापुब्य लोकनिक जय करैत जागत छनहँ । ऋदा मासुठव साहरक ङा गप नहि रूमना गेन छन जे मावि-पीठ नहि करैत जागह । ऋदा जखन भोवमे जयक नाद गामक सीमान पब सँ जाय कान जखन भेन खेन पता चनन जे ङा गप मासुठव साहर किएक कहने छनाह । महिनाखपबक स्मूनक रँछा सभ जखने ओम्बसँ अरौत बहय आकि मावि रँजवि गेन । कोनह्ना मोप ताप कएन गेन । हेब गाम पब जे अएनहँ तखन पुबनका रँचक रिद्यार्थी सभ अपन थिम्सा शुक कएनक ज कोना पौखविमे घुसा-घुसाकेँ केबाक थय पानिमे द' कय स्मृतव्रता दिरस दिन मार्ने बहयिन्ह खनगोआँ केँ, हेब ओहो सभ दोसब सान रँदना नेरौक तकिमे छन ऋदा अछ रँव... ।



videhavidēh pratham mēthilī pākṣik ī pत्रिका 15 फरबरी 2008(वर्ष1 मास 2 अंक 4) <http://www.videha.co.in/>

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह **विदेह** Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

3. महाकारा

महाभावत (खाँगा)

-----



यशे छन सुशामनसँ खा' छन जन-जीवन खति संपन्न ।

छन खहिना दिन रीति बहन खयनाह नाबद एकदिन जखन,  
स्नागत भेनन्हि खूर हुनकब ओहो बहथि खानदित तखन ।  
देखन शीन-गुण पाँडरक झुदा कहन द्रौपदीसँ सुनू रीत ज़,  
छी पनो पाँडरक झुदा निरामक नियम किए नहि रँनेने छी,  
नाबदक रीत समीचीन छन से नियम रँनेनथि पाँचो गोठे,  
एक-एक मास बहथु सभ नग द्रौपदी नियम नहि भंग हो ।  
रौबह रर्य पर्यंत छोड़य पड़त गृह त्रिष्टि भेन जेँ,  
पानन नियमक होमय नागन किछ कान धवि ज़,  
कनेत खएनाह रिप्र एक खर्जून पछनन्हि रीत की ।

चोब छन चोबेने गौकेँ हाफ़ास रिप्र छन कवि बहन,  
शिम्र छन गृहमे द्रौपदी संग हथिष्टिब जे बहि बहन ।  
रिप्रक शोपसँ नीक सोचि मूवी मूकेने गेन खर्जून,  
शिम्र खानि छोड़ यन गौकेँ घुबि खायन गृह तखन ।

माँगन खान्ना हथिष्टिबसँ दिया' गृहवागक खान्ना,  
नियम भंगक कएन हम खपबाध, की रौजन खहाँ ।

खर्जून ज़ खपबाध नागत जखन पैघक द्वाबा होयत,  
छोठ भाय कखनो खछि खारि सकैत रँड़ भाय घब ।

झुदा निकनि गेनाह खर्जून खान्ना नय माता भायसँ,  
भ्रमण देशे-कोसक करैत पहुँचन हविद्वाब गंग तठ,  
स्नान करैत कन नजबि छन नागवा काग्याक जेँ,  
कोना रँचि सकैत पहुँचि गेनाह पातानक निकठ ।

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā riddēh' pākṣik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

रिराह श्राथना स्त्रीकावन अर्जुन ङा छन रवदान भेठन,  
जनमे वसुता रैनत चनि सकरँ खहाँ ररधान रिन ।

मणिपुव पँचि जतय चित्रांगदा बाजकग्या छनि कपरती,  
रिराहक प्रस्तार अर्जुनक स्त्रीकावन मानन बाजा मशैरु,  
दौहित्र होयत हमव रंशज भेन ङा रिराह तखन जा कय ।

चित्रांगदाक पुत्र भेन रँडुराहन नाम बाखन गेन जकव ङा,  
पवम प्रतापी पवाक्रमी योह्या रैनन रैनक पाछु स्वनय छी ।

हेव ओतयसँ निकनि अर्जुन पँचन प्रभास तीर्थ द्वावका निकठ,  
शेस्त्र-प्रदर्शनक आयोजन केनन्हि प्रश्च निकठ पवरत रैरतक ।

प्रेम देखि स्वभद्रासँ प्रश्च छनाह स्वमाओने नर उपाय ङा,  
अपहवण कवरँ जीतरँ ह्यह यादरसँ रैनत तखने रौत ङा ।

रैननि सावथी रीव स्वभद्रा संग्राम छन रँजवन जखन,  
रूमा-स्वमा मेन छन कवओने प्रश्च जा कय तखन ।

रिराह भेन तदंतव अर्जुन संग स्वभद्रा गएनाह पुष्कव,  
पुवन जखन ङा रनराम प्रश्चक संग पँचन गँदप्रशु ।



देखि नररधू प्रसन्न हंती खानंद नहि समष्टी बहन,  
द्वीपदीसँ पाँच पत्र, आ'खिभिमन् सुभद्रासँ भेन छन ।

रौति छन बहन दिन जखन अएनाह जीर्ण शरीर अग्लि,  
रोगक निदान छन खाँडर रन बहय छन ओ'सर्प तस्कर ।

गंदक अछि मित्र ओ' जखन करैत छी जबरौक हम सूबसाब,  
नहि जबरय दैत छथि गंद, कक प्रपा खहाँ हे गंद अरताब ।

छी प्रसूत रुदा अम्र अछि नहि हमबा नग ओतेक,  
गंद ह्यक हेतु चाली योग्य शिक्क मात्रा जकरी जतेक ।

देन गाँडीर धनुष तूणीव अस्फय रकणक बथ नंदिघोष,  
चनन डारौक हेतु अग्लि पेनाक रौद अर्जूनक तोष ।

गंद मेघकेँ पठौनहि प्रज्ज कएन सचेत जे,  
रायक प्रयोग कएन अर्जून मेघ रिनायन से ।

तस्करक मृषापवातु गज द्र भेनाह प्रकष्ट ओतय,  
माँगन अर्जून दिर्याम्र हुनकासँ मौका देखि कय ।



जाडु शिरक उपासना करु दय सकैत छथि रवदान ओ',  
छन मय थायन थलिक कोपसँ रँचि नग अर्जुनक ओ' ।

मेरा कबरौक रौत छन मोनमे नेने ध्रतत छन ओ',  
रँनाडु सभा भरन अन्नपम नहि रँनन जे कतह हो' ।

#### 4.कथा

##### गमानदावीक ग्लमब

घब अरैत कान मोन कोना दनि क' बहन छन । सभ का एक दोसबा सँ किछु  
असंभर घटित होयबौक गप क' बहन छनाह । हम दनुं भाय सातम कम्कामे पढ'त  
छी, संगहि-संग । झुदा आग पौघ भायक पेटमे दर्द छन से ओ' टिहनीक रौद छुष्टी  
न' घब चनि गेन छनाह । स्कूनमे सभकेँ हँसत देखैत छी, तँ अपन घबक स्थिति  
यादि पड्ढा जागत अछि । अरुण्य ! सेहो होगत अछि आन रँचाक भग्य पब । हेब  
मोनमे अहो होगत अछि, जे हमरे सभ जेकाँ पबिस्थिति होयत एकरो सभक ।  
झुदा मरुँ प्रसन्नताक नाटक करैत जागत अछि । घबमे माय रौपक कनहक रौच डवायन  
सन बँहैत छी । नगैत बँहैत अछि जे अ सभ पबिस्थिति कहियो थमे नहि होयत ।  
नहितँ दोसबसँ गप्प कय सकैत छी, नहिये ककरो अपन मोनक गप्प कहि सकैत  
छी । रँब-रँखत कहियो अपन सहायताक हेतु सेहो सोब नहि क' सकैत छी । माय  
ठीके घबघुसका, झुददुँब आदि रिशेषसँ रिभूषित करैत छनीह । साँममे घुमनाग  
आकि दुर्गापूजाक मेना गेनाग, अ सभ रौत हमबा सभक जीरनसँ दूब छन । एक रँब  
भुकम्प जेकाँ थायन छन, सभ का श्रीन तोड्ढा कय रँहवायन, झुदा हम थाठ पब  
पड्ढे बहि गेनहँ । किछुतँ अकर्म्यतारुणी आ किछु अ सोचि कय , जे की होयत  
घब ठूँटि देह पब असत तँ समझासँ झुजियोतँ भेटैत । एक रँब रौरुँजीकेँ कठहक  
कोखा खेनाक रौद पेट हूनि गेनहि, दू रँजे बातिमे । अहो नहि हूवागत छन, जे  
रँगनमे श्रनजीक रौरुँकेँ रँजा नियहि, जे कोनो डाँकठबकेँ रँजा देताह ।  
हूवायनतँ छन, झुदा कहियो गप नहि छन, तँ आग काज पड्ढा पब कहियहि, से



हियाँ नहि भेन। माय केरौड़ पीठि कय पड़ सीकेँ उठैन्हि, कनेत थिजेत बहनीह। पड़ सी डोकैबकेँ रजउनक, तखन जा कय रौरूजीक जान रौचन। माय श्राप सेहो दैत बहन खाँ गहो कहैत बहन जे पाँच रर्यक रैठी बहैत छैक तँ सभ भरोस दैत छैक, जे कनेत किएक छी, खहाँकेँ तँ पाँच रर्यक रैठी खछि। खाँ ग सभ .....जाह, खपने भोगरह हमतँ दुनियासँ चनि जायर। रँहिन काँनेजमे पढत छनीह। काँनेजक बस्ता पेरै जाय पढत छन। खाँ काँनेजसँ खाँगा स्कून छन। रँहिन कहनहि, जे खछुँ सभ संगे हमवा सभक संगे चनू। एक दिन हमवा सभ गेलो बही। द्वादा गप रिन्न केने हम दनुँ भाँय खाँगू-खाँगू मठकेँत चन गेनहुँ। मोनमे गहो भर छन, जे छौड़ । सभ चीन्हि नहि जाय जे हमवा सभक ग रँहिन छथि। खाँर ग सोचैत छी जे चिन्हिये जागत तँ की होगत। खपन राजिउन्नक रिकासक कमी छन ग ? रौदमे पौघ भेन छी तँ माँ-रौपकेँ उकठैत छियन्हि, जे घबघूसू खाँ द्वाहचुकक संज्ञा जे देनहुँ खहाँ सभ, कहियो ग सोचनहुँ, जे कोनो पड़ सीसँ गप्प नहि कबरौक, संगी-साथी नहि रँनयरौक, घुमर-फिबर नहि कबरौक उपदेशक पाछु, जे खहाँ सभ उपदेशे देनहुँ, ओकव पाँछा गहो समाजक रूवागसँ दूब कबरौक उद्दुथा छन, परंतु येह तँ रँनेनक द्वाहचुक खाँ घबघूसू हमवा सभकेँ। बातिमे माय रौपक मगड़ क सीन सपनामे देखैत छनहुँ खाँ उवा कय उठि जागत छनहुँ। पौघ भाँय रँहिनसँ हमवा खुर मगड़ । होगत छन, द्वादा एक रँव माय-रौपक मगड़ क पछति, खुर कानन छनहुँ, खुर रौजन छनहुँ। किछ दिनसँ भाँय-रँहिनसँ मगड़ क रौद ठैका-ठैकी रँद छन। सभ रँव रँह नोकनि खाँगाँ भ ठैकेँत छनाह। द्वादा एहि रँव हम कानैत-कानैत रँहिनकेँ ठैकनियेक खाँ हब कहियो रँहिनसँ मगड़ । नहि भेन। भाँय पिठिया छन, संगे पढत छन ताहि हेतु ओकवासँ तँ मगड़ । होगते बहन, द्वादा कम-सम। एहि सभ गपक हेतु माँ पितार्जीकेँ जिम्मादाव ठहवारथि, जे सभसँ पड़ सी-सँरंधी, जान-पहचानसँ गप कबरौसँ ओ कहियो नहि रोकनहि खाँ सभठी दोष पितार्क छनहि। एक रँव ग्लार किनरौक जिदक रौद कएक रँव समय देन गेन, जे खाँग खाँयत कान्हि खाँयत। हम पढर छौड़ देनहुँ। खाँ तखन जा कय ग्लार खाँयन। रँहिन खखलो कहैत छथि, जे ग्लार खनरौक जिदक पूवा भेनाक रौद हमव पढ गक नय धूँठि गेन। रञ्जामे स्थान प्रथमसँ नीचाँ खारि गेन खाँ पितार्जी एकव कावण तंत्र-मंत्रमे ताकय नगनाह। एकठी तात्रिकसँ भैँठ भ गेनहि। कतेक दिन



हमवा सभ गाममे बहत जागत गेनहूँ । काँनोनीमे एकठाँ एकाँउन्ठेँ रौरूँ छनाह ।  
उ' रौरूँजीकेँ कहनखिन्ह, जे खहाँ तँ घूस नहि नैत छी, द्वादँ खहाँक पनी खहाँक नाम  
पव घूस नैत छथि । सभ त्रँसहबक रौद रिहाव सबकावक लोकबीमे दवमाला रँद भ  
जागत छेक । आ' ताहि द्वारे सभ त्रँसहबक रौद रौरूँजी हमवा सभकेँ गाम पठाँ दैत  
छनाह । एहि फममे हमवा सभ गाममे छनहूँ । पितार्जीक चिष्टी माँक नामसँ गाम आयन  
छन । हमही पढने बही । रौरूँजी मायकेँ निखने छनाह, जे जेँ खहाँ पाग नेने छी  
तँ नौठाँ दियोक । हम रिजरीनेसकेँ निखने छी, छाप्रा पड़त तखन पाग निकनत तँ  
रँदु रँदनामी होयत । एहि सभ पविस्थितिमे स्कूनमे हम घबक पविस्थितिकेँ रिसवि  
जयरीक श्रयास कवय नगनहूँ । न्दुँकेँ हँसय नगनहूँ । अ' आदति पकड़ने छी । घबक  
रँदु अ' कवय नगनहूँ । लोक सभ रौरूँजीक अमानदाबीक तँ चर्चा कबिते बहय । हम  
सभ घबक कनहक रिषय घबक रौहव खनरौसँ पवहेज कवय नगनहूँ, लोक रूमत तँ  
हँसत । आ' रूमू जे अमानदाबीक ग्लमबकेँ जिरैत जागत गेनहूँ । सोचरीक आ'  
गुनधुनीक आदति एहन पड़न, जे सुतेत सपनामे आ' जगेत निखरी-पढ़री कान धवि  
अ' पाँचाँ नहि छोड़नक । दसमामे छुमारी पबीक्षा किछु दिन पहिने देने छी । काँमर्सक  
पबीक्षामे एकठाँ श्रम रँनेनहूँ । द्वादँ उ' गनत रँनि गेन, हेल दौसव आ' तेसव रँव  
श्रयास केनहूँ । सभठाँ श्रमक उँतव खरैत छन द्वादँ पहिनो श्रमक उँतव पूवा नहि भ  
बहन छन । काँपीकेँ अँगाक नीचाँमे नुका नेनहूँ । आ' पानि पीरीक रँहल जे रँहबेनहूँ,  
तँ घब पहुँचि गेनहूँ । पढ़-त-पढ़-त सोचय नगेत छी । एक्क पन्ना उँनठेने घँठा  
रीति जागत छन । चिष्टि याखाना गेन बही एक रँव । किछु गोठे,हमव सभक सरँधी  
लोकनि, ओतय हमवा सभकेँ भेठि गेनाह । रँदु हाग-हाग सभ । ओतँ कहनखि  
किछु नहि द्वादँ हनकव सभक रँगेरौनी देखि कय, हमवामे हीन भारना आयन । चूप्त  
भीड़मे निकनि घबक नेन निकनि गेनहूँ । जेरौमे पाग नहि बहय से पेरै निकनि  
गेनहूँ । ओतय चिष्टि याखानामे सभ डवागत बहन जे कतय हवा गेन । सभकेँ  
कहनहूँ जे सभु भोखना गेन बही । सभु रौत करौ नहि रँतेनहूँ । सभ लोक जे  
भेठय येह कहय जे खहाँ, हननाक रँेठाँ छथि । रँेचारे भगराने छथि । हिनकव  
पिताक पे-स्लिप रिना पागयक रँना दियहूँ । पितार्जीसँ नहिँत सहकर्मी खुशी छनखि  
नहिये ठीकेदाव सभ । सहकर्मी एहि न' कय जे नहि सुय कमागत अछि, नहिये  
दौसवारकेँ कमाय दैत अछि । पेघभायक गिनती रँचामे रँदमाशिये होगत छन । एक



रैब ट्रैसिहबक रौद जखन हमबा सभ गाम गेनहूँ, तँ पैघ भाय जे सभक हुनराइ सी नौक-नीक गाछ उंखाइ कय अपना घबक आगाँ नगाँ जेत छन, से आरै एकहि सानमे दबू,सभसँ पाछू रैसनितारि रिद्यार्थिक कपमे गिनतीमे आरि गेन। एहि रैब ट्रैसिहबक रौदक गाममे गामक निरास किछ रैशी नमगव भ गेन छन। हेल्व ऋथ्यामत्री पदक दारेदार एकठा नेताजी जखन गाममे रौठ मँगरौक नेन अयनाह, तखन काका हुनकासँ भैठै कएनहि, आ कहनखिन्ह जे हमब भायकेँ ररुसँ नन-ररु मे ट्रैसिहब कए दियोक, रैचा सभ पौसा जयतेक। नेताजी कहनहि जे जौँ हम जीति गेनहूँ तँ ङा काज तँ हम जकब कवर। ररुमे जयराक पैवरी तँ ररुत आयन ऋदा नन-ररुमे जयराक हेतु ङा पहिने पैवरी छी। संयोग एहन भेन जे ओ नेताजी जीति गेनाह आ ऋथ्यामत्री सेहो रैनि गेनाह। ओ शिपथ ग्रहण केनाक रौद ङा काज धवि केनहि, जे पितोजीक ट्रैसिहब कय देनखिन्ह। आ हमबा सभ पुनः शिहब आरि गेन बही। गाममे बहीतँ एक गौठे जे हमब भायक सर्गी छनाह, केब गप यादि पडि जागत अछि जे ओ ककरो अनाक प्रसंगमे कहने छनाह। हुनकब अन्साब हुनकब मायक सुभार तीर छनहि, आ ओ खेनाग आगते कान मगइ। कवय नगेत छनीह। ऋदा ओहि दिन ककरो अनाक ओ आव तीर सुभारक देखने छनाह। खारि आर्थिक स्थितिक उपवात होयरना कनहक पविणाम हमरो सभ देखि बहन छनहूँ। दू ठाँ घटना आगयो हमबा रिचनित कए दैत अछि। एकठाँतँ जनकम टैक्क कठौतीक मास- मार्च मास। ङा घटना तँ सभ साने होगत छन, ऋदा कठौती ररुत-ररुत एहि सान धवि आरि कय पूवा मार्च मासक दवमाला काठि नेनक। माँ कहैत छनीह जे आरि भोजन कोना चनय जयतेह। आरि तीख माँगय जगहँ ग सभ। ऋदा रौरूजी एकठाँ गामक भातिजकेँ पोस्टकार्ड पठेनहि आ ओ आठ सय ठाँका आनि कय दय गेनखिन्ह, तखन जा कय अस्वबकाक भारना खमे भेन छन। तीख मँगैत अखनो जौँ ककरो देखैत छी तँ मोन कनपय नगेत अछि। दोसब घटना अछि जखन हमबा घबक आगाँ एकठाँ एकठाँडेँ भेन छन आ ओकवा रौद हमब भाग खेनाग छोइ देने छनाह आ कानि-कानि कय आँखि नान कए नेने छनाह। पितोजी जखन रूमरय नगनाह तँ ओ जराँ देनहि, खलकैँ जौँ किछु भय जायत, तखन हमबा सभक की होयत। पितोजी गंगारंस रैनीहिठ, जी.पी.एफ., ग्रेछुठी आदिक हिसार नगाय भायकेँ रूमनहि जे 99000 कपयाँतुवत भैठैत आ हेल्व महिने-महिने पेशिनो भैठैत। नगलग एक घंटा तक रौरूजी





भायकेँ रूमरैत बहनाह ।

हमबा सभक ओहिठाम एक गोष्ट पीसा थायन छनाह । आगयो घर्मे का अरैत छथि, तँ हम स्वस्मित अन्नभर करैत छी । रौरूजीक हुनकब साब भेनखिन्ह से एहि ओहदासँ हँसी सेहो चनि बहन छन । ओ कहनन्हि जे हमरे पितार्जी जेकाँ ग्रामानदाब एकठा री.डी.ओ. साहेरँ संभावपबमे छनाह । पितार्जी हुनकब मनाह छनखिन्ह, कष्ट, काष्टि अहसब भेनाह । झुदा हमरे सभक घब जेका हुनको घबमे खाँटे ठाँ छनन्हि । पीसा कहनखिन्ह जे कथी ने अहसब भेनहँ, गाममे बहितहँ आ मचान पब रैसि माड्ड भात खएतहँ । माड्डक काबरौबमे ह्वायदा होगत ।

रैहिनक रिराह रौद घबमे कखनो कान रैहनोग अरैत छनाह । जमायक अरिंते देवी माँक नगड्ड । पितार्जी सँ शुक भय जागत छन, किएकतँ घब गंतजाम तँ किछुओ बहिते नहि छन ।

द्वैसहबक रौद पितार्जीक अडियान घूसखोबकेँ सजा देरँय पब चनन । आ जखन सबकारी तंत्र पबसँ रिश्यास खतम भए गेनन्हि, तखन एकठा तार्त्रिकक ह्मेबमे पडि गेनाह । घबमे माता-पिताक रौच कनह रैरि गेन । एक दिन पितार्जीसँ हमरो रैहसा-रैहसी भए गेन आ तीनु भाय रैहिन गवा नागि कय कानय नगनहँ । तकवा रौदसँ भाय-रैहिन सभसँ नगड्ड । होयरँ समाप्त भय गेन ।

खनेब ग्नधुन करैत बही, घबक नगमे पहुँचनहँ तँ भीड़ देखि मोन हदसि गेन, जे रौरूजीकेँ तँ किछु नहि भ गेनन्हि । घबमे पहुँचनहँ तँ माँ-रैहिन सँ पूछय नगनहँ, जे की भेन ? सभ रौन भरोस देरँय नगनखि तँ आरौ तामस उठय नागन । जोबसँ कानि कय रौजय नगनहँ जे रौरूजी मवि गेनाह की ? कतय छन्हि हुनकब मृत शरीर । ताहि पब रैहिन कहनन्हि जे नहि, हुनका किछु नहि भेनन्हि । अहाँक संगी जे मकान मानिकक रैरि अछि, से ओ ओकब चोष्ट भाय , ओकब पिता आ बिकशीरना, चाक



बिक्शी पब जागत छन । रौंचावा बिक्शी रौना बिराह क' कय कनियाँकेँ खननहिये छन । एकठाँ बिशान ध्रुँक बिक्शीकेँ धक्का माबि देनकेँक । ठामहि मबि जाय गेनाह । हमब कानरौँ खतम भय गेन । ज़ा जे ख़ाफ़त ख़ायन छैक से ख़ाग ककबो खनका घब, ओना ओ' जे मृत भेन छन हमब संग डेह सानसँ स्कून जा बहन छन प्रतिदिन प्रातः । सभ दिन प्रातः सीह ी पब काँनरौँन रौंजरौँत छनहूँ ख़ा ओ' सीह सँ उतरौँत छन, ख़ा संगे हम सभ स्कून जागत छनहूँ । मोन पड़न जे कान्हि सेहो सभ दिन जेकाँ हम काँनरौँन रौंजेने छनहूँ, तँ ओकब रौंहिन जे चश्मा नगरौँत छनि, ख़ा मनकाहि छनीह, से डुपबसँ तमसाकेँ कहनक जे कतेक जोबसँ ख़ा देवी तक काँनरौँन रौंजरौँत छी, ख़ा सेहो जे रौँब-रौँब किएक रौंजरौँत छी, ख़ारि बहन ख़छि । कान्हितँ ओ' ख़ायन ह्मदा हम तखनहि कहि देनियेक जे कान्हिसँ हम काँनरौँन नहि रौंजायरौँ, ख़हाँकेँ हमबा संगे जयराँक होय तँ नीच उतबि कय ख़ायरौँ ख़ा संग चनरौँ । ओ' नहि ख़ायन तँ हम किएक काँनरौँन रौंजरौँतहूँ । डेह सानमे पहिन रौँब भेन छन जे हम काँनरौँन नहि रौंजेने छनहूँ ख़ा ओ' डेह सानमे पहिन रौँब स्कून नागा कएने छन । ख़ारौँ हमबा मोनमे हेरौँय नागन जे कतहूँ ओ' रौंजि तँ नहि देने होयत जे हम कान्हिसँ काँनरौँन नहि रौंजायरौँ । ह्मदा किंसागत ओकब कोनो ख़ानो कार्यक्रम होयतेक । किएकतँ चोष्टँ भाय ख़ा पितक संग बिक्शीसँ कतहूँ जा' बहन छन । ख़स्तु हम चिंतित छनहूँ ह्मदा दुःखी नहि, ह्मदा मोनक गप कियो रूँमय नहि तैँ ह्मह नठकेने ठाँह बही । हमतँ मात्र सोचने बही जे कान्हिसँ एकबा संगे स्कून नहि जायरौँ, जायत ज़ा ख़सगरे । ह्मदा ओ' तँ ख़सगरे नहि जायत से सल कय देखा देनक । हमब मायक ख़ाँथिमे लोब छनन्हि, ह्मदा हमब भीतब प्रसन्नता, किएकतँ हमब पितजीक मूँ जे बकि गेन छन ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

5. पद्य (श्रौंगी)

74. एस.एम.एस.

कहू एहिमे खहाँ छी,  
सहमत खाँ की छी खहाँ असहमत,  
दू कपमे दिय' खहाँ,

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

थपन रिचाव कय एस. एम.एस. ।

थाहि कमाडु थहाँ कपेया,  
हम रूँवि छी भाग,  
नूँ ठेकानोजी छी ङा सभ,  
रूँवि का नहि थाग ।

75. थकूँथा

थागत भेनहूँ हम थकछ तथन,  
ङा थकान छन भेन भावि ।  
रेदपाठक सुनि कय थाग्रह,  
थएनहूँ हविद्राव बुखानि ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

भवि दिन मंत्र भाथि सोचन,  
थीव पूङ्गी सभ थायरँ ।  
झदा गुतुक्का पंडित सभ,  
था' गु सभ छन अघायन ।  
कएनक मेनु परिवर्तन कहनक,  
थाग अल्खा अहि नायरँ ।  
बूमन नहि छन हमबा गु,  
हाथ धोने छनहुँ रैसन ।  
थायन अल्खा देखि कब जोड़ि ,  
रिनती कए हम पूछन (अल्खासँ),  
हमतुँ छी ट्रेनसँ थायन,  
अहाँ कथीसँ अयनहुँ ।  
हमबासँ पहिने अहाँ एतय,  
कौन सराबी सँ पहुँचनहुँ ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 76. दीया-रौती

थायन दीया रौती,  
कतेक थमारस्या थछि रौतन,  
जकब थन्हाबमे नागन चोष्ट,  
कतेक जीर थरुचायन पौबहि,  
थन्हाबक छन थती ।  
दीया रौती थननक प्रकाशि,  
त्रान-ज्यातिक थकाशि,  
नमन कबय छी हम एहि रौतक,  
थंधकाब-तिमिब केब होरैय नाशि ।

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā bidēh' pākṣik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 77. गठानियन सैनून

घब भेन समसुीपुव,दिनीमे छी आयन,  
खोनि सैनून गठानियन,अयनहू कमायने ।

पुनिसक रोक देखि कय गेनहू गाम घुबि,  
पुनः छी आयन, सैनून कतय रानाउन ?  
गठानियन, रोक अछि पव अछि पुनिसक,  
मेहो अखनो धवि नहि रूमन यो अहाँ ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 78. शेर नहि उठत

गामक कनियाँ मृगनि शेर अँगनामे बाखन,  
सभ हरा कएने अछि नगव दिशि पनायन,  
जे का बहथि से घुमेत बहथि र्नाक दिशि,  
साँममे खयनाह देखन कहन गेनथि ऋगन ।  
गामपव का नहि उठैतक शेरकेँ किएक,  
हम कोना छरितहुँ भारहुँ ओ' होयतीह ।  
ऋगन पव भारहुँ की भैस्रव केनहुँ अतउतह,  
समय रँदनन नहि रँदनन अ गाम हमव ।



Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह **विदेह** Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 79. खगता

गोव नागि मोसीकेँ निकनेत,  
पूछथि खछि किछ खगता,  
खाग नहि पूछन जखन,  
रैसन हेल ओ' तखन ।  
हेव उठन हेल नहि पूछनहि,  
सोचि जे बहत नहि छन्हि काज ।  
जाग कोना पागक रँडु खभार ।

नोक कहछ, आयन छथि खगते,  
ओना दर्शनहूँ दर्नभ, खही कछ,  
खगतामे खछि पूछेत का आगूसँ ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 80. खतिचाव

तीन सान छन खतिचाव, नहि होयत एहि कावण ।  
पडितरै सभ रूमखन्ह, छन्हि पत्रा सभ रिंकागत,  
पकड़त सभ रँनावसी पत्राकेँ, सेहो नहि रिंकायत ,  
समय खभारै होयत ग, जेँ खतिशय भ जायत ।



## 81. वरँड खाँडु

वरँड खाँडु खाँ रमन कक चष्टी,  
खपचनीय तथा सभ देखन झ्रात,  
रँड छन रूधियाव,केनक घष्टकैती,  
शुक जखन भेन सिह्रांत, रिराद,  
रिराहठीक भेनाक रौदक दोसव सिह्रांत,  
नडका रिराह कानमे रिसवनाह भाषण,  
नर सिह्रांतक सृजन कय केनहि सम्राजिन ।

82. झँह चोकठन नाम हँसझख भाग

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

झँह चोकठन नाम छन्हि हँसझख भाग,  
रँहूत दिनसँ छी थायन कक कोनो उपाय,  
माबि तबहक डाँक्यूमेंठ देनहि देखाय,  
पुनः -प्रात भ' जायत देन नीक जेकाँ रूँमाय,  
शिँठ-कठ वस्तु सुनमाय देनहि झँझाय,  
झँह चोकठन नाम हँसझख भाय ।



### 83. रौजा खलौ रौजाडु

मेहनति खलौ कक,  
हन हमवा दिय ।  
चित्र खलौ रौनाडु,  
खारवण सजाडु,  
हमव कितारक ।  
नृह हम कक,  
रौजा खलौ रौजाडु ।  
प्रति हमव बहत,  
मेहनति कवरौ खलौ,  
खागसँ नहि ङा रौत,  
खच्छि जहियासँ शौहजलौ ।

### 84. पिल्लुश्याम

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

दहेज रिरोधी प्राहेसब,  
केव सुनुं ग्ना रीत,  
पुत्री रिराहमे कएन,  
एकव देव प्रचाव ।  
पुत्रक रिराहमे रँदनि सिह्नात,  
रधु बहय श्याम रुदा,  
माकति भेठय द्यैत,  
सिह्नातक मूनमे, छोड़ू रिरैक ।

85. बाजा श्री खन्वन्नज सिंह

एक सुबमे रीजि देखाडू,  
नहि खकनन्न, नहि सिंह,  
पूवा एकहि रैव रँताडू,

videhavidēh pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā 15 farrabārī 2008(varṣa 1 māsa 2 āṅka 4) <http://www.videha.co.in/>

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā bidēh' pākṣik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine bidēh **विदेह** Videha bidēh <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

बाजा श्री खन्वबल्लज सिंह ।

86. पाँच पागक नानछड्डी

पबिराव छन चना बहन,  
रौंछि भवि दिन,

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

पाँच पागक नानछड़ि,  
दस पागमे कनेक मोठ नपेठन ।  
देखेत नहाग साँममे,  
ठैना चना कय खायन,  
रैठाकेँ पढायन,  
खाग.खाग.ठी.मे पढाँ ,  
निकनन कएनक रिराह,  
जजक छनि ओ' रैठी ।

पिता कौन कथुँ पठाउन,  
गेन रिसवि, पितक सृतिमँ दूब ।  
नशा-मदिबामे नीन, कनियाँ परेशान,  
नगेनन्हि खागि, मडकनि,  
ओकवा रँचेरामे ओहो गेना मडकि ।

कनियाँतँ गजिवि गेनीह ठामे,  
झदा ओ' तीन मास धवि,  
कथुँ काँटि पश्चात्ताप कए,  
झगनाह रँचारे ।



Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 87. थन-थन

कतरौ दिन रीतन,  
गद्दा जेकाँ थनथन,  
पष्टी ठैनक ओ' वस्तु,  
भेन आग निपत्ता ।  
मष्टि थमा कय नगा खवंजा,  
पजेरौक दय पंजि,  
नर-रँचा सभ कोना नूनत,  
ओहि गद्दा पव थारि ।  
थन-थन करैत ओ' वस्तु,  
नोकक शोकक कहाँ भेन रँद,



माँ सीते की खहाँ रिनैनहूँ,  
ओहि दबाबिमे खँत ।

#### 88. चोकक़ा रिराह

सिंखारँ हिस्सक छूँत,  
नहीं खानरँ कनियारँकेँ,  
भायक माथ छूँत ।  
भेन धमगिज्जब सानक सान रीतत,  
हरक-हरती दूनु भेन चोब रिराहक कैदी,  
नहीं छन कोनो हाथ पवंच,  
छन सजा परैत ।  
भागन घबसँ हरक खारँ पछतायन घबरौबी,  
झुदा की होयत खारँ,  
ओ' समाजक रान्निचाबी ।  
एनेकशिनक नगड़ामे भाय-भायकेँ मारन,  
चोकक़ा रिराहक घठनामे ओकवा दोहवायन ।

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā bidēh' pākṣik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

### 89. ब्राह्मितीया

कय ठाँडु रैसनि,  
खासमे छनि,  
भाय खायत, रीतन,  
साँन खायन ।

खाँथि नोब छन सुखायन,  
चलान कनियाँक गप पव,  
सानमे एक रैब छन खरैत,  
सेहो फम ग्वा ठूँठन ।  
कय ठाँडु रैसनि,  
धोखवि खविपन रिमर्जित,  
छन साँन खायन ।

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣikā ī pātrikā riddēh' pākṣikā pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 6. संस्कृत शिक्षा

(खाँगा)

रयम् गदानीम् अति सर्वना वर्या कथां श्रुणुः । एकाम् कथां रदामि । कश्चन् रूहः  
अस्ति । तस्य शक्तिः नास्ति । जीर्णम् शरीरम् अस्ति । चनितम् शिकुम् न । सः  
रूढस्मितः अस्ति । सः एकम् रनम् गच्छति । रने सर्वत्र भ्रमणम् करोति । खदित्तम्  
किमपि नश्यते रा गति सर्वत्र भ्रमणम् करोति । सः एकंरूढ समीपम् गच्छति । रूढं  
पथति । उन्नतानि हनानि सन्ति । किन्तु हनानि उपवि सन्ति । सः रूहः चिन्तयति ।  
हनानि उपवि सन्ति । अहं निस्पृहः अस्मि, कथं प्राप्तामि । किम् करोमि । गति  
चिन्तयति । रूढः उन्नतः अस्ति । अहं निष्पुः अस्मि । आरोग्यं कर्तुम् न शक्नामि ।  
किम् करोमि । कथं हनं प्राप्तामि । गति चिन्तयति । रूढस्य उपवि रानवाः सन्ति ।  
रूहः एकः उपायः करोति । एकं शिनाखलं स्वीकरोति । शिनाखलं उपवि स्फिपति ।  
रानवाः हपितः भवन्ति । हनानि अधः स्फिपन्ति । रूहः संतोषेण हनं सर्वम्  
खादति । रूहसंतुष्टः भवति । कथायाः अर्थः त्वातरंतः । अहम् त्वातरंतः ।  
धन्यवादः । नमोनमः ।

मम् नाम गजेन्द्रः । भरवाः नाम किम् ?

मम् नाम वमा । भरतः नाम किम् ?

समीचीनम् ।

उत्तिष्ठतु ।



थागच्छतु ।  
गच्छतु ।  
रोहित थागच्छतु ।  
रोहितः किम् करोति ?  
रोहितः गच्छति ।  
रोहितः थागच्छति ।  
उपरिशतु ।  
थन्निवामः उपरिशति ।  
उत्तिग्रातु ।  
थन्निवामः उत्तिग्राति ।  
सुनीता पिरति ।  
थासुहा पिरति ।  
ओम गच्छति ।  
थादतु ।

सा थादति ।  
थासुहा थादति ।  
श्रुतिः किम् करोति ।  
श्रुतिः थादति ।  
म्लहा किम् करोति ।  
म्लहा पठति ।  
निखतु ।  
थासुहा निखति ।  
थश्चिनी हसतु ।  
थासुहा हसतु ।  
थासुहा हसति ।  
सुमन्तुः हसति ।



पशुतु ।

सुमन्तुः पशुति ।

प्रियङ्गा रदतु ।

प्रुष्टुफनकं तत्र अस्तु ।

प्रियङ्गा रदति ।

आगच्छतु ।

ह्रीडतु ।

आसु आगच्छति ।

ह्रीडति ।

गच्छति पठति निखति

सः एषः सा एषा भरान भरती

भरान उतिष्ठति ।

भरान उपरिषति ।

भरती निखति ।

भरती पठति ।

अहं गच्छामि ।

अहं आगच्छामि ।

अहं उपरिषामि ।

अहं उतिष्ठामि ।

अहं पिरामि ।

अहं आदामि ।

अहं ह्रीडामि ।

अहं हसामि ।

अहं पठामि ।

अहं निखामि ।

अहं रदामि ।



भरान किम् करोति ।  
खंह पश्यामि ।  
भरान उतिष्ठतु ।  
भरान उपरिशतु ।  
भरती पठति ।  
भरती पठतु ।  
भरती निखति ।  
भरती निखतु ।  
भरती पशुति ।  
भरती पशुतु ।  
भरती गच्छति ।  
भरती खागच्छति ।  
भरती उपरिशति ।  
उतिष्ठति ।  
रदति ।  
निखति ।  
खंह पठामि ।  
खंह रदामि ।  
खंह पश्यामि ।  
ददातु ।  
किम् करोति ।  
खागच्छतु ।  
खागच्छति ।  
नयतु ।  
मासु-मासु ।  
ददातु ।  
प्रपया उतिष्ठतु ।  
एकम् - एकादशे

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

द्व द्वादशे

त्रिंश

चत्वारि

पञ्चः

षट्

सप्त

अष्ट

नव

दश

एकादशे

द्वादशे

त्रिंशतिः

चत्वारिंशत्

पञ्चाशत्

षट्शतम्

सप्तशतम्

अष्टशतम्

नवशतम्

दशशतम्

शतम्

संस्कृतम् कथं समयः रक्तव्याः गति गदानीम् रयं जानीम ।

पञ्च रादनम् ।

कः समयः ।

षट् रादनम् ।





थर्गु र्नादनम् ।  
समयम् थर्करैः निथतु ।  
घर्णा समयं दर्शयतु ।  
दशे र्नादनम् ।  
दशोधिक नर र्नादनम् ।  
पथनून दशेर्नादनम् ।  
एकादशे र्नादनम् ।  
सपाद एकादशे र्नादनम् ।  
सपाद पथर्नादनम् ।  
सपाद थर्गुर्नादनम् ।  
सार्ध सपुर्नादनम् ।  
पादोन एकादशेर्नादनम् ।  
एरमेर सार्ध दशेर्नादनम् ।  
एक

द्वि

त्रि

चतुर्नादनम्

गदानीम् रयम् एकं स्वभाषितम् श्रुतः ।

स्वभाषितम्

प्रियराक्य प्रदानेन सर्वे तुषान्ति जन्तरः ।

तस्मात् तदेर रकतुरां रचने का दविद्वता ।

रयम् गदानीम् यत् स्वभाषितम् श्रुतरंतः तस्य थर्थः एरम् थस्तु ।

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣikā ī pātrikā vidēh' pākṣikā pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

यदि राकां रदामः सर्रे जनाः अपि संतुष्टाः भवन्ति । न केरनं जनाः अपितु सर्रे  
प्राणिनाः अपि संतुष्टाः भवन्ति ।  
अतः प्रियः राकायमेर रदामः । प्रिय राकाय् रज्जुम् धनं दातरां किमपि नास्ति । प्रिय  
राका कथने दाविद्वयं कृतः ।

सङ्गणनम्

भरतु सङ्गणार्थाः रयम्

भरतु सङ्गणार्थाः रयम्

भरतु सङ्गणार्थाः रयम् एक रासरे....

ओ हो हो, मनसि मे रिश्र्वासः

सम्यक् रिश्र्वासः

मे मनसि रिश्र्वासः

रयम् एक रासरे....

भरतु शान्तिः सरत्रे

भरतु शान्तिः सरत्रे

भरतु शान्तिः सरत्रे

एक रासरे,ओ हो हो.. ।

सन्नि एक-तया रयम्

सन्नि एक-तया रयम्

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

धृन्ना हस्त-हस्ततनं

सन्ति एक-तया रयम्

एक रासरे,ओ हो हो .....

खद्य न खस्ति दवः कस्मात्

खद्य न खस्ति दवः कस्मात्

खद्य न खस्ति दवः कस्मात्

एक रासरे,ओ हो हो....

सिंहिवस्तु ।

7. मिथिना कना- चित्रकना

(खाँगा)

हमबम मने रिराह खाँ उपनयनसँ एक दिन पहिने फमशेः कनियाँ खाँ रँकखाकेँ खाँ  
उँढावन जागत खच्छि मने श्रेष्ठा स्त्रीगण यर खाँ खान पदार्थसँ रँनन उँरँठन नगरैथ

videhavidēh pratham mēthilī pākṣik ī pत्रिका 15 फरबरी 2008(वर्ष1 मास 2 अंक 4) <http://www.videha.co.in/>

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह **विदेह** Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

छुथि । एतय मंडप पव सरैवंग पठिया पव षठ पागस अविपनक समझ मंडप पव ङा  
कार्य संपादित होगत थुति ।

ङा एकठा वझा करच थिक ।

रिधि- तीनठा आयत रैनाडु एकक नीचाँ एक । पाँच थंड उधुधिव था तीन झतिज थंड  
कर । एहि 18 थंडमे हून रैनाडु ।

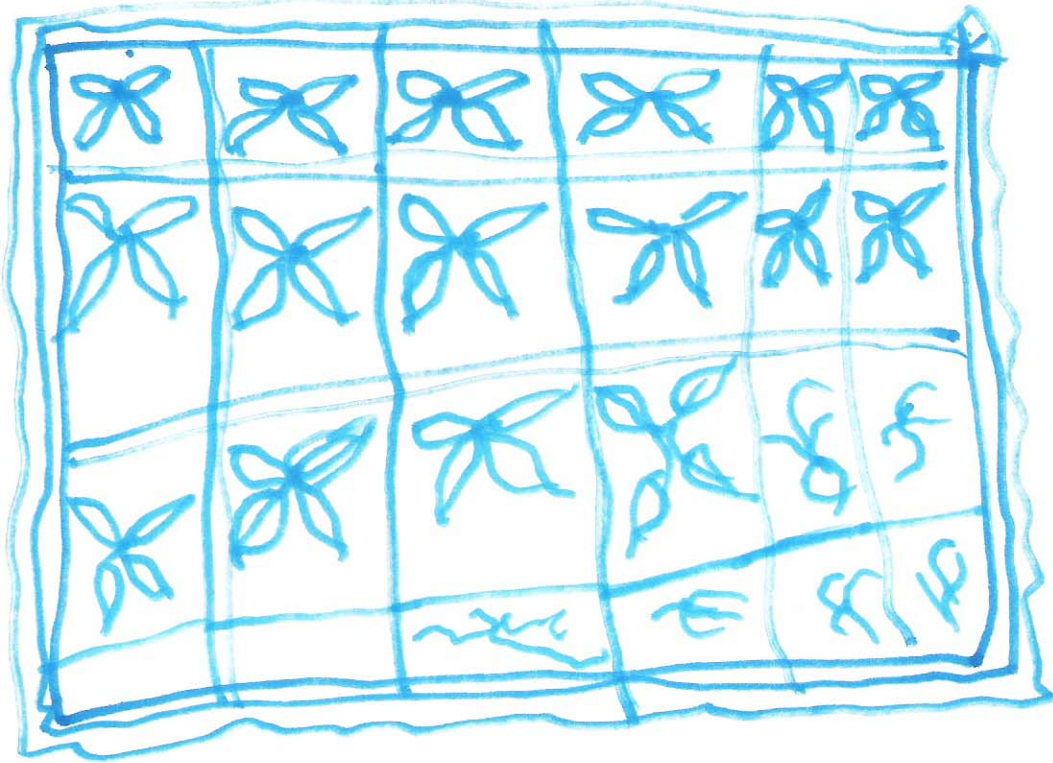
Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका त्रिदश भाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine त्रिदश विदेह Videha त्रिदश <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

उत्पन्न गीतिका अरिपन



लक्ष्मी ठाकुर



## 8. संगीत शिक्षा

ॐ जे मातो स्रबक रर्णन पिछना अकमे देन गेन छन ओकवासँ आगू आडु ।  
एहि सातू स्रबमे षडज आ' पंचम मने सा आ' प अचन अछि, एकव स्रब पाठमे डुपव  
नीचाँ होयरौक गृजागस नहि छैक ।  
सा अछि आश्रिय आकि रिश्राम  
आ' प अछि उल्लासक भार ।  
शेष जे पाँचठाँ स्रब अछि से सभठाँ चन अछि, मने डुपव नीचाँक अर्थात् रिश्रतिक  
गृजागस अछि एहिमे ।  
सा आ' प मात्र श्रुत होगत अछि ।  
आ' आरँ रिश्रति भ' सकैत अछि दू तबहँ श्रुतसँ डुपव स्रब जायत किंरा नीचा ।  
जदि डुपव बहत स्रब तँ कहँ ओकवा तीव्र आ' नीचाँ बहत तँ कोमन कहायत ।  
म कँ छोऽरि कय सभ अचन स्रबक रिश्रति होगत अछि नीचाँ, तखन रूँमू जे "रे,  
ग,ध, नि" ॐ चावि ठाँ स्रबक दू ठाँ कप भेन कोमन आ' श्रुत ।  
'म' केव कप सेहो दू तबहक अछि, श्रुत आ' तीव्र ।  
रे दैत अछि उमोह  
ग दैत अछि शांति  
म सँ होगत अछि भय  
ध सँ दूः ख  
आ' नि सँ आदेश ।  
(अन्वर्तते)

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 9. रौनारनां ध्रुते

रौह्वा गौह्वा न नहुँखादयान

एकठा छनि रौह्वा गौह्वा न खा' एकठा छनाह नहुँखा दयान ।

रौह्वा गौह्वा न नहुँकी छनि खा' ओकवा जादू खरैत छनैक ।

नहुँखा दयान रौह्वा गौह्वा नक प्रशंसक छन किएक तँ ओ' छन प्रेमी, रौह्वा गौह्वा नक प्रतीक ।



छन ओहो तांत्रिक ।

कमना-रँनानक कातक केरठी छनि रँहवा, रँखवी, रँगूसवायक बहनिहावि ।  
हकनि छनि ओ' कमक सँ सीखनक जादू ।  
दूनवा दयान छन मिथिना बाज्यक भरोइक बाजफ़माव, ओकरे नाम छन नहुँखा दयान ।  
नून जे ओ' रँहवासँ सिखनक तँ सभ नामे बाधि देनकैक ओकब नहुँखा ।  
नहुँखा दयानक ग्वक छनाह मंगन ।  
सिह्न प्रकष ।  
खकाशमे रिन खुँष्टीक धोती ठँगेत छनाह, सुखना पब उतारैत छनाह ।  
रँहवा गाछ हँकैत छनि, जकवासँ नगइ । भेन ओकवा सुग्गा रँना पौसि नैत छनीह ।  
कमना कातमे बहैत छनाह आ' भजेत छनाह,

कमनेक आसन,ओहीमे रँस हे कमना मैया ।

रँहवा रबकेँ मावि सीखने छन जादू । बाजफ़मावक रिराहक प्रस्तारकेँ नहि ठूँकवा सकनि  
झदा । रँबियाती दवरँज्जा नागन तँ भ' गेनेक कह सुनी आ' सभकेँ रँना देनक ओ'  
रँतु ।

मंग्री मन्नक एक आँखिक रोशी खतम । आहि रे रँ ।

र्यापारी जयसिंह छन मोहित महूवाक रँठी पब,ओकरे खडाँत्र । आहि रे रँ ।

ग्वक नग गेन बाजफ़माव आ' आदेशे भेनेक, जो कामाख्या, सीखय नेन  
षठ् नून, आ' जादू ।

चलिका मंदिरमे योगिनीसँ षठ् नून सिखनक आ' आदेशे भेनेक संवया ग्रामक तुरन  
मोहिनीसँ षठ् नूनक एक खंग सीखरौक ।

ओहि गामक सिह्न देरी बहथि रागेश्विरी ।

नवरँनि चटैत छन ओतय । दैव खरैत छन ओतय ।

सिखनक बाजफ़माव सिह्न नून खनहद आ' आत्रो चह ।

कविया जादूकेँ काँठय रँना मंत्रफ़कनक बाजफ़मावक कानमे ।





कमना रँनानमे थायन बाजफ़माव ।  
रँह्वा सुखेनक धावक पानि ।  
बाजा पता नगेनक जूकियासँ, खननक रँह्वाकेँ, झदा ओ' तँ नगा देनक दोष  
बाजफ़माव पव । यत्र भेन तेयो कमनामे पानि नहि थायन, नहुँथा पठेनक सभठा  
पानिकेँ पतान ?  
नहुँथाकेँ पकड़ि कय खानन गेन । ओ' खपन नृसँ जनाजन केनक कमनाकेँ । झदा  
कहनक रँह्वाकेँ माफी दियोक ।  
रँह्वा कहनक थारँ तोँ भेनह हमव रँठीक योग्य ।  
थारँह रँवियाती न'कय ।  
नहुँथा रँवियाती न' क' पहुँचन ।  
तीठा पान खयलेक,एक कमनाक पानिक हेतु,दोसव रँह्वाकेँ माफ़ कवरौक  
हेतु ।  
था' तेसव ओकव रँठीसँ र्याह कवरौक हेतु ।  
तीनूठा पान उठेनक नहुँथा था' शुक भेन गीत-नाद ।  
पियास नगलेक नहुँथाकेँ शिष्य मिनमिनकेँ पठेनक गनाव पव ।  
डोरी छोट भय गेलेक । खपने गेन नहुँथा डोरी पेघ भ' गेलेक ।  
हूनमती छुनि ओतय,पतिक प्रतिभासँ प्रसन्न छुनि ओ' ।  
मन्नक था'थि ठीक कएनक रँह्वा ।  
कमना पहुँचन कनियाँक संग नहुँथा, झदा थाहि बेरौ ।  
नहुँथाकेँ चक्रू मावनक रँह्वासँ दूब भेन ओकव शिष्य ।  
झदा नहुँथा चहने छन पठेव कमना मेय्याकेँ ।  
कमनाक धाव खूने-खूनामे ।  
झदा कामाख्याक जदूगवनी खयनीह था' जीरति कएनहि नहुँथाकेँ ।  
दूग्मनक रँनि चहनेक कमनाकेँ ।  
-----

videhavidēh pratham mēthilī pākṣik ī pत्रिका 15 फरबरी 2008(वर्ष1 मास 2 अंक 4) <http://www.videha.co.in/>

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह **विदेह** Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 10. पंजी श्रद्ध

नेखक- रिद्यानंद सा पङ्गीकाव

भावतीय गतिहासक रेत्ता ओ' जातीय रारस्वाक मर्मत्रे नोकनि जनेत छथि, जे  
भावतरर्षक ब्रौह्मण नोकनि सर्रप्रथम रेदक खाधाव पव रिभिन्न रश्नामे रिभाजित



बहथि ।

जेना- सामरेदी, यजुर्देदी, खादि कहरथि । ऋदा समयक प्रभारमे भिन्न ऋेत्र- प्रऋेत्रमे बहनिहाव ब्राह्मण नोकनि भिन्न-भिन्न संस्कृतिसँ प्रभारित भए गेनाह । ऋेत्रीय संस्कृतिसँ प्रभारित होएरौक ऋथ्य कावण छन रिशिष्ट, ऋेत्रक रिशिष्ट, जनराह, ऋेत्र रिशेषक भाषा-रिशेष, भिन्न-भिन्न ऋेत्रक भिन्न-भिन्न खाहाव एरम भेष-भूषा खा एक ऋेत्र सँ दोसब ऋेत्र जयरौक हेतु खारागमनक खसुरिधा खादि । फनतः ऋेत्र- रिशेषक ब्राह्मण सऋदाय, ऋेत्र रिशेषक खाचाव-रिचाव, खान-पान,रेशे-भूषा ,भार-भाषा ओ' सगुता संस्कृतिसँ प्रभारित भय गेनाह ।

उपरोज्ज कावणे पुरानक हग खरैत0-खरैत भावत रर्यक ब्राह्मण समाज भिन्न-भिन्न ऋेत्रक खाधाव पव रिभिन्न रऋामे रिभाजित भए गेनाह । पुरानक समुतिये भावत- रर्यक समस्त ब्राह्मण समाजकेँ दस(10) रऋामे रिभाजित कएन गेन बहय । ब्राह्मणक ङ्र दसो रऋा थीक-उकेन,कागुफुङ्क,गोइ,मेथिन,सावसुत, काण्ठि,गुर्जब, तेनंग,दरिइ ओ' महावाऋ्तीय । सुन कएँ पुरोज्ज पाँच केँ पऋ गौइ खा खपव पाँचकेँ पऋ दरिइ कहन जागत ख्छि । एकव सीर्याकन भेन रिन्धाचन परतक उतुव पऋ गौइ ओ रिन्धाचन परतक दऋिण पऋ दरिइ ।

मेथिन ब्राह्मण

पऋ गौइ रऋक मेथिन ब्राह्मण नोकनि पुस्तु-दव-पुस्तु सँ मिथिनामे बहरौक कावणे मिथिनाक रिशिष्ट, संस्कृतिसँ प्रभारित भए गेनाह, तँय खहि कावणे पुराणक हगमे मेथिन ब्राह्मण कहाए सुप्रसिऋ भेनाह । मिथिना रसुतः प्राचीन बाहरंशिक बाजधानी बहए । ऋदा पऋातक हगमे रिदेह बाजरंशिक समस्त प्रशामित ऋेत्र खथरा जनपद मिथिना कहाए सुप्रसिऋ भेन खा एहि जनपदक बहनिहाव ब्राह्मण नोकनि मेथिन ब्राह्मण कओनहि । ङ्र मिथिना खाग नेपान ओ' रँगनादेशिक सीमा सँ सठैत खनुरतुमान ख्छि, जे



बाजनीतिक एरं सांस्कृतिक दृष्टिसँ अपन एक रिशिष्ठ, स्थान बथेत अछि ।

मैथिन ब्राह्मण लोकनि मूनतः दुगए गौठ र्देदक अन्नयायी थिकाह । एक रत्नाक यजुर्देदक माध्यान्दिन शाखाक अन्नयायी थिकाह तँ दोसब सामरेदक कौथूम शाखाक अन्नगमन करैत छथि । यजुर्देदक माध्यान्दिन शाखाक अन्नयायी "राजमनेयी" कहरैत छथि, एहिना सामरेदक कौथूम शाखाक अन्नयायी छन्दाग कहरैत छथि । दुहक संस्कावमे किछ सूत्रो अन्तुव अछि । छन्दाग उपनयनमे चाबि गौठ संस्काव- नामकवण, चूड कवण, उपनयन ओ समारतन म्हादा राजमनेयीक ग्रा चाक संस्काव थिक, चूड कवण, उपनयन, र्देदाबन्ध ओ समारतन । एहिना छन्दाग रिवाह म्हाथतः दु खन्डमे सम्पन्न होगत अछि, पूर्ण रिवाह खाओव उन्तव रिवाह । उन्तव रिवाह सूर्यास्तिक बाद तावा देखि कए होगत अछि । म्हादा राजमनेयी रिवाहमे एहन कोनो रिभाजन नहि अछि । एकहि फ्रममे दिन अथरा वातिमे कखनहुँ भए सकैत अछि । राजमनेयी ओ' छन्दागक धार्मिक संस्कावमे तँ सूम्न अंतव कतौक अछि ।

(अन्नरतते)



## 11. मिथिना आ संस्कृत

कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित दोसव नाटक छति- महाकरि विद्यापतिक गोवम्बरिजय नाटक ।

एहिसँ पहिने प्रथम पव आधाबित नाटक प्रचल छल । एहि अर्थमे आ एकटा क्रांतिकारी नाटक कहल जायत ।

नाथ संप्रदाय किंवा गोवम्बर संप्रदायक प्ररुक्त योगी गोवम्बरनाथक कथा न कय एहि नाटकक कथारसु संगठित भेल छति । गोवम्बरनाथक प्रब मञ्जुन्दनाथ योग लागि कदनीपुत्रमे बाजा 18 ठा वानीक संग भए भोग कए बहल छथि ।

गोवम्बर आ काननीपादकेँ द्वावपान रोकि दैत छति । मंत्री तोनहो पिठरौ दैत छति जे योगी सबक प्रवेश कतह नहि हो आ वानी सबकेँ बाजाक मोन मोहने बहरौक हेतु कहल जागत छति ।

गोवम्बर आ काननीपाद नष्टथाक रेष धरैत छथि आ मोहक नृ बजाकेँ देखरैत छथि । एहि रीच बाजाक एकमात्र पुत्र रौधनाथ खेनागत-खेनागत मरि जागत छति । बाजाक शंका नष्ट पव जागत छैक तँ ओकरा मारौक आदेशी होगत छैक । नष्ट रौचकेँ जिया दैत छैक । बाजा हुनकर पविचय पुछैत छथि तखन ओ हुनका अपन पूर्व जन्मक सभला गप रता दैत छति, जे अहाँ तँ जोगी छी भोगी नहि ।

एहि नाटकक पात्रमे महामति(बाजाक मंत्री) आ महादेवी- मञ्जुन्दनाथक ज्येष्ठ वानी सेहो छथि । मञ्जुन्दनाथ कदनीपुत्रक बाजा आ पूर्व जन्मक योगी छथि । मञ्जुन्दनाथ अंतमे कहैत छथि जे गोवम्बर जेहन शिष्य हो आ महादेवी जेहन सभ नारी होथु ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

## 12. भाषा आ प्रौढ्यागिकी

आरै किछु रात यूनीकोड आ रेरसागठ केव संरधमे ।

कोनो हागनके पढरौक हेतु कंप्ठवमे आरथक हां ठ होयर जकबी खछि, नहि तँ मभसँ सबन उपाय खछि, रड डोक्युमेंठके पी.डी.एफ. हागनमे परिवर्तित कक । एहिमे नहा नकमान दनु खछि । नहा जे रिना कोनो हांठक संमठिक पी.डी.एफ.हागन



जाग निपिमे निखन गेन अछि, ताहिमे पढन जा' सकैत अछि । एकब नुकसान जे जखने हागनमे जा' कय सेर एज ठेकस्ट कबर तँ अंग्रेजीतँ सेर भय जायत, झुदा देरनागरी तेहन सेर होयत जे पढाि नहि सकी । दोसब यूनीकोडक मंगनमे ठांगप कएन डाँक्यूमेठकेँ एडोरँ अफारैँसँ पी.डी.एफ.मे परिवर्तित कबरामे दिक्कत होय तँ संपूर्ण हागनकेँ खोनि कय सेनेकठ कक यूनीरर्मन यूनीकोड एम.एस.हाँठ ड्रॉप डाँउन मेनुसँ सेनेकठ कक हेब प्रिँटमे जा कय प्रिँटब एडोरँ एफारैँसँ सेनेकठ कक ।

आरँ ग्रा हागन परिवर्तित भय जायत पी. डी. एफ.मे ।

आरँ रेरसागठ रँनेरॉक पूरँ किछु झुखा रॉतकेँ देखि निय' ।

चावि तबहक गँठबनेठ ब्रॉडजब अछि, शेष सभठा एकबा सभकेँ आधाब रँना कय बचित अछि । तखन सभसँ पहिने ग्रा चाक अपना कंप्यूँटबमे गँसुँँन कक.

1.उपेवा

2.मोजिल्ला

3.मागफासाँहठक गँठबनेठ एक्लप्रावब(ग्रा तँ होयरेँ कबत)

आ' चाविमक रॉीठा(प्रायोगिक) रर्मन आयन अछि,

4. एपनक,अखन तक मेकिनठेसक नेन डुन ग्रा, सहावी (रिँडोजक हेतु) ।

आरँ जखन रेरँ पेज उपनोद कक रा पहिनहूँ तँ एहि चाक पब खोनि कय जकब देखि निय' । (अनुवर्तते)

Videha 'vidēh' pratham mēthilī pākṣik ī pātrikā vidēh pākṣik pātrikā Videha Maithili Fortnightly e

Magazine विदेह विदेह Videha विदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

### 13. बचना निखरौसँ पहिने...

जेना मात्रिक छन्द रेदमे बारहाव कएन गेन अछि, तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ रिचाव सेहो ओहि हंग सँ भेटैत अछि ।

सून बीतिसँ ङा रिभङ्ग अछि:-

1. उदात्त
2. उदात्तव
3. खन्दात्त
4. खन्दात्तव
5. स्वरित
6. खन्दात्तान्वजस्वरित

7. प्रचय (एकठाँ श्रुति-खनहत नाद जे रिना कोनो चीजक उपेन्न होगत अछि, शेष सभठाँ अछि आहत नाद जे कोनो रसुसँ ठकवोना पव उपेन्न होगत अछि । ) ।

1. उदात्त- जे अकारादि स्वर कर्थादि स्थानमे उर्ध्व भागमे राजन जागत अछि ।

एकवा जेन कोनो चेन्ह नहि अछि ।

2. उदात्तव- कर्थादि अति उर्ध्व स्थानसँ राजन जागत अछि ।



Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रिदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine रिदेह विदेह Videha रिदेह <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

3. अन्नदात- जे कर्षादि स्थानमे अधोभागमे उंचावित होगछ । नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएन जागछ ।
- 4.अन्नदाताततव- कर्षादिँ अंत नीचाँ रौजन जागत अछि ।
5. स्त्रवित- जाहिमे अन्नदात बहैत अछि किछु भाग आ' किछु बहैत अछि उदात । उपवमे ठार रेखा खेचन जागत अछि, एहिमे ।
6. अन्नदाजान्नवज्ज्ववित- जाहिमे उदात, स्त्रवित किंरा दू रौदमे होगछ , 3 प्रकारक होगछ ।
- 7.प्रचय-स्त्रवितक रौदक अन्नदात बहनासँ अनाहत नाद प्रचयक,तानक उपेति होगत अछि ।  
(अन्नरतते)



#### 14. प्ररासी मैथिन English मे

Uposatha is the Buddhist fast day, Upagupta was a famous Buddhist saint. A Jataka mentions a king of Videha and calls him Vedeha. He is made a contemporary of Chidani Brahmadatta of Kampilya who conquered all except Videha in the course of a little over seven years but was defeated by Videha due to the superior wisdom of the Videhan minister, Mahosadha. A new era of close intellectual cooperation between Videha on one side and the Kuru-Panchala country on the other. Bahulaiya is represented as the king of Mthila in the Bhagavata. There he is depicted as a contemporary and devotee of Krishna who paid a visit to Mthila to see his Brahmana friend Srutadeva, so Bahulaiya flourished slightly before the Bharata War. Two events given in Purana belong to the reign of Bahulaiya, the visit of Balarama and Krishna to Mthila in search of a jewel and Duryodhana's training there under Balarama and the visit of Krishna to Mthila to show favour to Srutadeva and Bahulaiya. Krishna, Bhima and Arjuna went to Grivraj to have a fight with Jarasandha of Magadha, this event occurred in the reign of Bahulaiya of Mthila through which territory the three passed in their journey from Indraprastha to Rajagriha. A king of Mthila, called Janaka, was the disciple of Vyasa Krishna Dvaipayana who used to officiate at the sacrifices. Vyasa had a high opinion of the learning of



his di sciple. He asked his son Suka to go to him to learn the science of liberation. Janaka received and instructed his son who later reported this to his father. This Janaka was Bahul ai va. The Bhagavata says that Suka was also with the Rishi s who accompanied Krishna to Mthila to see Bahul ai va and Srutadeva. There were Jankriti, the last of the Janaka dynasty, might flourish even after Yudhi sht hira.The Puranas conclude with the remark that with Kriti ends the race of the janakas.We know from Arthashashtra that Karala Janaka brought the line of Vai deha to an end. Karala is represented as the son of Ni mi, whereas Kriti was the son of Bahul a.Karala Janaka, king of Mthila, is known to the Brahmanical literature. Kriti flourished after Siradhvaja but not after Vedic Janaka. Karala is reported to be cruel and unscrupulous. The names of Bahul ai va, one with many horses and Kriti,performance.The list of Puranas appears to be continuous and there is no apparent break, it is presumed that other Janakas are to follow. So, Kriti is not the last Janaka,who is a distinct Karala Janaka. The Puranas are assumed to have been narrated in the reigns of the Paurava king Adhi si makrishna, the Aikshvaku. Bahul ai va, the king of Mthila is a contemporary of Krishna in the Bhagavata, his son Kriti cannot be identified with Karala on any account.With Kriti the main regular line of the Janakas closed and after him came irregular lines of the Janakas as we know from the Jatakas and the Mahabharata.One of the clans of the



Vajjian Republic were the Kauravas. Pandu, the Kuru king, get strengthened by the treasure and army from Magadha, went to Mthila and defeated the Videhas in battle. Videha Kritakshana was one of the princes who waited upon Yudhishtira in his palace newly constructed by Maya. He was Kriti as a Yuvaraja or as a King. Krishna, Bhima and Arjun on their way from Kuru to Rajagir, for fighting Jarasandha, took circuitous route through Mthila to avoid detection. Videha was a friendly country. The Videhas were defeated by Bhima on his digvijaya in the east and was staying with Videhas and then he could defeat other powers with comparative ease. The rivalry between the sons of Pandu and Dhritarashtra had its effect on the Videhas and Karṇa defeated these people and caused them to pay tribute to Duryodhana. Videhas were vanquished by Arjuna on the battle of Bharata. At one place in Mahabharata the Videhas along with others attacked Arjuna, at another place they are in the army of Yudhishtira and are slain by Kripa. Balarama who did not take part in the Bharata war took refuge during the period in Mthila thus it may be surmised that Videha kings remained neutral in Bharata war. Pandu had conquered Mthila, Bhima subdued the Rajas of Mthila and Nepal but Duryodhana came to Mthila to learn Gada Yudha from Balarama, when Krishna and Balarama were in Mthila in quest of Syamantakanani. Later Balarama went on a pilgrimage and visited the ashrama of Pulaba-Salagrama and the Gandaki. After the Bharata war the Puranas do not



provide us with any genealogical list for Videha and for this information is available from the Mahabharata and the Jatakas. Videhan king was reputed for the welfare and all were versed in the discourses of atman the grace of the Lord of the Yogas they were all free from the conflicting passions such as pleasure and pain, though they were leading a domestic life. The Buddhist literature mentions Makhadeva of Mthila and all his 84000 successors and says that they adopted the lives of ascetics after ruling over the kingdom. The kings of Videha are known to be sacrificers. Ni mi and Vasi sht ha had a quarrel and cursed each other to become bodiless, i.e., Videha. Both then went to Brahma and he assigned Ni mi to the eyes of the creatures to wink , i.e., ni mēsha, and said Vasi sht ha should be son of M tra and Varuna with the name Vashi st ha. This fable just supply a reason for the birth from M tra and Varuna. It says that long sacrifices were performed by the Videhan kings. Other famous sacrificers were Devarata and Si radhvaja. Devarata obtained the bow of Shiva which centred the sacrifice of Si radhvaja. The Yaj navata of Si radhvaja correspond to the sacrificial areas with temporary residences of members of the kingship in the manner described in Yajur Veda. The barber who found a grey hair in Makhadeva's head got grant of a village, equivalent to a hundred thousand pieces of money. The King Sat adyuma , Si radhvaja's second successor , gave a house to the Brahmana Maudgal ya descendant of King Mudgal a of North

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका त्रिदेश पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e

Magazine त्रिदेश विदेह Videha त्रिदेश <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

Panchal a. Vedeha, king of Videha, gave Mahosadha a thousand cows, a bull and an elephant and ten chariots drawn and sixteen excellent villages and the revenue taken at the four gates, when he was pleased with an answer given by him Before becoming king he lived as a prince and ruled as a viceroy the the maneer exactly in the case of Makhadeva. The eldest son succeeded the throne when the old king adopted the life of an ascetic. The king was assisted by his ministers and the priest played an important role and the sages instructed the king. King Vedeha of Mthila had four sages, Senaka, Pukkusa, Kavi nda and Devi nda , who instructed him in the law. Senaka was most important and Senaka and Pukkusa were counsel l or s